' ब्युवटीफुल लेडी '

— एन. शिवदास

— अनुवादिका : चन्द्रलेखा डि'सौझा

अपनी जीवन संध्या पर पहुँची हुई उस वृद्धा को मैं अनिमेष देखता रहा। अभी तक उसे अंदर बुलाया नहीं गया था। द्वार पर हल्की-सी आहट होते ही उसकी पथराई नजर काँपती हुई उस द्वार की दिशा में घुम जाती थी। नर्स किसी एक का नाम लेकर पुकारती थी, तब वह पुरुष या स्त्री, उस नाम के अनुसार अंदर जाते थे। जैसे मैं महसूस कर रहा था कि नर्स मेरा नाम पुकारे, वैसे ही उस जाज्वल्यमान, गोरी वृद्धा को भी लगता था। वह मेरे सामने कुर्सी पर ही विराजमान थी। उसकी वह स्थिति आँखों में सहानुभूति को जगाती थी।

द्वार खुला, नर्स ने किसीका नाम पुकारा और वह व्यक्ति भीतर चली गयी।

अब कम-से-कम पन्द्रह-बीस मिनट तक वह द्वार खुलने के कोई असर नहीं थे। दो मरिज पहले ही भीतर थे। मेरा मन अस्वस्थ हुआ। समय काटने के लिए हाथ में किताब भी नहीं थी। अकेला मन उस चार दीवारी में घुम रहा था। दीवार से सटकर बैठे हुए आबाल-वृद्ध पर से मेरी निगाहें घुमते घुमते फिर उसी स्वरूपवान वृद्धा पर जाकर स्थिर हो जाती थीं।

वह वृद्ध महिला जैसे साँचे में ढली हुई बुत थी। झुर्रियोंवाला चेहरा, सुखे हुए होंठ, आँखों के आसपास गहरी काली छाया, गालों पर निस्तेजता, सिर के बाल ढंग से बनाये गये थे, फिर भी पतले पतले बालों में से श्वेत मस्तिष्क झाँक रहा था। उस महिलाने अपने गंजेपन को ढँकने का भरसक प्रयत्न किया था। उसके कान भी लटक रहे थे। कानों में हीरों की बाली, गले में नेकलेस और देह पर जरी का मूल्यवान फ्रॉक पहना था। उसके हाथ की त्वचा भी सूख गई थी। एक हाथ की कलाई पर सुनहरे पट्टे की छोटी घडी थी, दूसरे हाथ में सोने की चूडियाँ ध्यान खींच रही थी। पैर कुम्हला गये थे। अंगुलियाँ भी जैसे सूखकर एक दूसरे से चिपक गई थीं। मैंने अनुमान लगाया, वह वृद्धा पचहत्तर साल की होनी चाहिए। उसकी वह अवस्था देखकर मैं सोचने लगा, एक दिन मैं भी वृद्ध हो जाऊँगा, मेरी दशा भी इसी वृद्धा जैसी हो जायेगी, क्षणभर मैं काँप ऊठा। कल्पना वास्तविकता से अधिक भयंकर होती है, पर मन की यह कल्पना ज्यादा समय ठहरी नहीं। उस वृद्धा की तरफ मेरा मन फिर खिंच गया। जैसे ही मन की उडान अपने गंतव्य पर पहुँची, उस में छुपे इन्द्रधनुषी रंग लपककर बाहर आ गये।

उस महिला का चेहरा गवाही दे रहा था कि आज उसकी सुन्दरता ढलती उम्र के साथ ढल गई है, पर अपने जमाने में वह भी काफी सुन्दर रही होगी। मेरी कल्पना ने उस वृद्धा का कायाकल्प कर दिया। समय के उस पार वह युवावस्था का आवरण ओढ रही थी। मैं उसे मंत्र-मुग्ध-सा एकटक देखता ही रहा। उसके अंग उपांग मैं साँचे में ढालकर देखने लगा। क्षण भर के लिए मैं दिग्मूढ हो गया। वहाँ बैठे दूसरे लोगों ने मुझे, उसे निहारते हुए देखा या नहीं, यह बताना मुश्किल ही है पर उस बेजान-ढलती आँखों ने मेरी चोरी पकड ली थी। उसने सुनहरी फ्रेम के, मोटे काँचवाले चश्मे जो पहन रखे थे उसके अन्दर से वह मेरा मुआयना कर रही थी और उसके झुर्रियोंवाले चेहरे से मन्द मन्द मुस्कान झलक रही थी। उसकी वह मुस्कान भी उसके बूढापे की तरह बूढी थी। बिना दाँतोंवाले उसके मुख को मैं देख न सका। मेरे मन ने मुझे टोका। पता नहीं वह क्या सोच रही होगी? छी! ऐसा होना ही नहीं चाहिए था। कम-से कम मुझे अपने आप को दूसरी तरफ मोडना आवश्यक था, और कुछ नहीं तो उस कुर्सी से उठकर कमरे से बाहर तो जा ही सकता था। वास्तव में देखा जाये तो डॉक्टर को मिलने बहुत से लोग आये थे। उस वृद्धा के अलावा युवतियाँ और स्त्रियाँ भी वहाँ पर थी। न जाने मेरा ध्यान उनकी तरफ क्यों नहीं गया? अगर गया भी तो ज्यादा समय स्थिर नहीं हो पाया। इतने समुदाय में मुझे वह गोरी चिट्टी वृद्ध महिला ही उभरकर दिखी।

मुरझाई सुन्दरता के पीछे यौवन सभर जिन्दगी खडी थी। आवेमारिया-द-कोस्ता- नर्स ने द्वार खोलकर आवाज लगाई और पलक झपकते मेरे सामने की कुर्सी खाली हुई, वह वृद्ध महिला खडी हुई और आहिस्ता से अन्दर जाने लगी। नर्स ने उसे सहारा दिया। जैसे पश्चिम दिशा में सूर्य धीरे धीरे चट्टान के पीछे गायब हो जाय और हमें मेहसूस हो कि वह समन्दर में डूब गया, वैसे ही वह द्वार के पीछे गायब हो गई। जैसे ही नर्स ने दरवाजा बन्द किया वह आँखों से ओझल हो गई।

मैंने इत्मीनान की सांस ली। आसपास दृष्टि घुमाने का साहस मुझमें नहीं था। बेवजह मुझे मेहसूस हो रहा था जैसे मैं कोई चोरी कर रहा था। गुनाह करने का दुख मेरी आत्मा को कोस रहा था।

काफी समय बाद में सन्तुलित हो पाया, सामान्य अवस्था का एहसास हुआ और मेरे सामने की व्यक्तियाँ मुझे दिखने लगी। उस की कुर्सी खाली ही थी। कमरे के बाहर बहुत से लोग खडे थे, पर कोई भी उस कुर्सी पर बैठने नहीं आया। मुझे लगने लगा, कोई तो वहाँ आकर बैठे। मैंने दरवाजे में से इशारा कर के किसी को बुलाया कि यहाँ एक कुर्सी खाली है, पर उसने इशारे से ही मना कर दिया। मेरा नाम अभी बुलाया नहीं जायेगा यह सोचकर मैं भी अपनी कुर्सी छोडकर कमरे से बाहर आ गया। बाहर खडे लोगों में जैसे मुझे कोई पहचानता नहीं था, सिर्फ मेडीकल रिप्रेजनटेटिव जो अपनी स्कूटर के सहारे खडा था, शायद वह मुझे पहचानता था। मुझे देखकर वह मुस्कराया, उस समय उसकी वह मुस्कान मुझे बहुत प्यारी लगी। मेरे मन के विचार बादलों को स्थिर करने के लिए, तथा ध्यान बँटाने में वह सहायक होगा यह सोचकर, अपने मन के बवंडर को लेकर मैं उसके पास गया।

'सब पेशंटस का चेक-अप होने तक हमें अन्दर जाने की इजाजत नहीं' उसने हँसते हुए कहा।

'अगर अन्दर जाना है तो कुर्सी खाली है' मैंने कहा।

'जानता हूँ, मैंने अभी दरवाजे में से देखा है, पर वह कुर्सी उसकी है।' यह सुनते ही, मेरे सामने वह फिर साकार हुई। जिन विचारों को परे किया था वही खयाल फिर विचाराकाश पर उदयमान हुए।

'कौन है वह?' अनजाने ही मैंने सवाल पूछा।

'जुविजा की पत्नी बडी जमीनदारीन।'

'उसे बहुत सारे लोग पहचानते है नहीं?'

'उसका भी एक जमाना था।'

'मतलब?'

'उसका जमाना था, अर्थात पुर्तुगाली गवर्नर को भी उसने अपने इशारों पर नचाया था।'

'उसकी इतनी मजाल?'

'वह अपने जमाने की एक सुन्दर स्त्री थी। ब्युटीफुल लेडी,' उसके यह शब्द सुनते ही लगा जैसे उसने सबकुछ अपनी आँखों से देखा हो पर उसकी उम्र तो मेरे जितनी ही दिखती थी। मैंने हँसते हुए कहा...

'तुम तो ऐसे कह रहे हो जैसे उसकी सुन्दरता को तुमने खुद निरखा हो।'

'वह बहुत मशहूर थी, पूरे मडगांव शहर में उसके चर्चे थे। तुम यहाँ के नहीं हो इसलिए तुम अनजान हो।'

'जुविजा की पत्नी सुन्दर जमींदारीन, इसके बावजूद भी डॉक्टर की कन्सलटेशन के लिए उसे दवाखाने में आना पडता है। देखा जाय तो वह डॉक्टर को अपने घर बुला सकती है नहीं?' मेरे मन का सवाल मन में ही रहा। खुले दरवाजे से मैंने उसे आते देखा। मेरी अवस्था फिर पहले जैसी ही हुई। मैं स्तब्ध रह गया, मेरे दिल की धडकन ऐसे बढी कि मैं उस धडकन को महसूस कर रहा था।

देहलीज पार करते समय उसके पाँव लडखडाये, हाथ में छाता और पर्स संभालते हुए वह चल रही थी। उसकी हालत ऐसी थी कि कोई भी जाकर उसे थामे। सीढियाँ उतरने के लिए किसी की मदद माँगने के लिए, उसने काँपते हुए सामने देखा। मैं अस्वस्थ हो गया। मेरे मन में आया कि आगे जाकर मैं उसका हाथ थाम लूँ। तब मैंने देखा कि वह गिर रही है और मैं बिना सोचे समझे ही एकदम आगे बढा और उसका हाथ थामा। उसने मुझे देखा, मन्द मुस्कुराते हुए कहा –

'ओब्रिगाद'– धन्यवाद।

'आइए, इस तरफ आइए' कहते हुए मैं उसे समतल भूमि पर ले चला।

उसकी कार कहीं रास्ते पर होगी यह सोचकर मैंने उसे कहा,

' मैं आपको आपकी कार तक छोड दूं।'

' नहीं बाबा, मेरी कार नहीं है, मैं चलकर ही जाऊँगी, मेरा घर चर्च के पास ही है।'

अब वह अकेले ही चलेगी यह सोचकर मैंने उसका हाथ छोड दिया और उसे चलने के लिए रास्ता छोडकर मैं एक तरफ सरका। एक दो कदम चलते ही मुडकर उसने मुझे संबोधित किया –

' सिंयोर– (महाशय) आपको अगर समय है तो मेरे साथ चलेंगे ?'– उसके विनीत शब्दों ने मुझे जैसे बांध लिया, मैं उसे मना न कर सका। सच तो यह था कि मेरे नाम का बुलावा कभी भी आ सकता था। मुझे डॉक्टर से मिलना था, पर अनजाने ही मैं उसके साथ आहिस्ता आहिस्ता चलने लगा। काफी चलने के बाद हमने एक बडे घर के दालान में प्रवेश किया।

आते–जाते मैंने वह पुराना घर बहुत बार देखा था। देखते ही आँखों में बस जाय उतना बडा घर था। एक जमाने में घर के सामने अच्छी खासी फुलवारी रही होगी। पौधों के लिए बनाई गई वह व्यवस्था अब भग्न किल्ले के अवशेषों के समान थी। बाग में लगाया गया झूला, अब अपने ही खंभो में साँकल को लपेटे हुए टूटा फूटा पडा था। संपूर्ण परिवेश अब उस वृद्धा की तरह कभी भी कालग्रस्त हो सकता था।

सुन्दर फूलों का वह बगीचा, इस औरत की तरह ही था, यह विचार आते ही खयाल आया कि सुन्दर बाग, सुन्दर इन्सानों पर निर्भर है।

हम अहाते में पहुँचे, इतने में अन्दर से एक काली साँवली औरत फ्रॉक पहने हुए आई। मेरा अनुमान था कि वह साँवली औरत नौकरानी होनी चाहिए।

देरी हो गई मेमसाब ? उसने पूछा। उसने अपनी आदतानुसार मुझे कहा– ' वेंज ' अर्थात आइए, बैठिए। मुझे पोर्तुगीज भाषा में संबोधित किया जा रहा है यह सुनते ही नौकरानी ने भी अपनी गलती सुधारी।

' आइए, बैठिए। यह कहते हुए वह वृद्धा भी एक कुर्सी पर बैठी। वह उसी के लिये थी। साल की लकडी की वह कुर्सी थी, जो आज कल उपयोग में कम लाई जाती है। दीवार पर पुरुषों की आदमकद तस्वीरें लटक रही थी। एक के बाद एक तस्वीर पर मेरी आँखें घुम रही थी। अचानक एक तस्वीर पर मेरी दृष्टि स्थिर हो गई।

सुन्दरता की प्रतिमा–सी उस औरत की तस्वीर मुझे खींच रही थी।

' वह मेरी तस्वीर है।' शायद मेरी अपलक दृष्टि को उसने पढ लिया था।

' सुन्दर, अति सुन्दर।' उत्साहित होकर मैंने कहा। उसकी आँखों में आँखें डालकर देखा। वह अत्यंत आनंदीत हुई। उसकी मुखाकृति इस अवस्था में भी प्रफुल्लित हुई। जैसे नई शक्ति का संचार हुआ हो। वह कुर्सी से उठकर एक झटके में मेरे करीब आई और कहा––

' आइए, मेरे कमरे में अन्दर आइए। तस्वीरों का आल्बम देखिए।'

' मुझे कुछ अजीब लगा। मैंने कहा, नहीं नहीं रहने दीजिए। वैसे भी मेरा नंबर अब आने ही वाला होगा।'

देखो सिंयोर मैं तुम्हें डॉक्टर के यहाँ भी देख रही थी। तुम क्या सोच रहे थे, मैं समझ गई थी। अब मैं वृद्ध हो गई हूँ। मेरा शरीर अब ढीला हो गया है पर मेरा दिल अब तक वृद्ध नहीं हुआ है। मुझे अपनी जवानी के दिन अब भी याद आतें हैं। आज तुम्हारी आँखों के भावों को देखकर, वह सब फिर उजागर हो ऊठा। तुम सुन्दरता के पूजारी लगते हो। मुझे देखकर तुमने क्या सोचा होगा, मैं समझ गई। अपने जीवन के बारे में जो संभाल के रखा है मैं तुम्हे वह दिखाऊँगी। आज तो तुम्हें देनेके लिए मेरे पास कुछ भी नहीं है, पर एक दिन ऐसा था, जब यहाँ काफी चहल पहल होती थी।

' नहीं मुझे कुछ नहीं चाहिए, मैं जा रहा हूँ।'

' तुम्हारी बातें मैं बिना बोले ही समझ गई, इसलिए तुम बुरा न मानना। वह वृद्धा मुझे खींचकर अपने शयनकक्ष में ले गई।

शयनकक्ष में सिसम की लकडी का नक्काशीकाम किया हुआ पलंग आकृष्ट कर रहा था। दरवाजे के परदे जर्जरीत हो गये थे। दीवार पर हर क्रिश्चन के घर में होती है वैसी जिजस की– लास्ट सपर– अन्तिम भोजन की तस्वीर लगी थी और सीलींग पर

से हूक पर लटका हुआ बडा झुम्मर लटक रहा था, वह भी धूल खा-खाकर गन्दा हो गया था, उसका असली रंग भी दिख नहीं रहा था।

'बैठो'- उसने एक बडी कुर्सी की तरफ इशारा किया और अलमारी के पास गई। उसे खोला, दराज में से दो आल्बम निकालकर मेरे सामने आयी।

आल्बम देते हुए उसने कहा, 'यह मेरी बिती यादें जो मैंने संभालकर रखी है देखो' दोनो आल्बम को मखमली कवर था और उसकी खुशबू भी मन को प्रसन्न कर रही थी। पूरे शरीर में झनझनाहट होती थी। फिर भी वह आल्बम देखे बिना मैं रह न सका। डॉक्टर को कल मिल लूंगा, यह सोचते हुए मैंने अल्बम खोला। पहले ही पृष्ठ पर पोर्तुगीज भाषा में कुछ लिखा हुआ था। वह पृष्ठ काफी सुन्दर था। उत्सुकता से मैं तस्वीरों को देखने लगा। वह इतनी सुन्दर दिख रही थी कि मैं पागल सा हो गया। आनन्दित होकर मैं तस्वीरें देख रहा था, यह देखकर वृद्धा भी खुश हुई और मेरी कुर्सी के पास आकर वह खडी हो गयी।

आल्बम में उसकी तरह तरह की तस्वीरें थी। कौमार्यवस्था की, शादी की, घुमने गई थी उस समय की, घर में, बगीचे में, समन्दर किनारे, नारियेल के पेड की छाँव में, अलग अलग भावों- मुद्रा में, अलग अलग जगहों में तस्वीरें ही तस्वीरें। उसने उन सबको क्रम से आल्बम में लगाया था।

तृप्ति का अनुभव करते हुए मैंने आल्बम नीचे रख दिया।

उसने दूसरा आल्बम खोलकर मेरे हाथ में थमाया। 'यह मेरा व्यक्तिगत आल्बम है' उसने कहा। आज तक मैंने किसी को भी दिखाया नहीं है। बोलते हुए वह मेरी कुर्सी के पीछे जाकर खडी हो गई।

ऐसी सुन्दर तस्वीरें मैंने पहले कभी भी देखी ही नहीं थी। एक से बढकर एक सुन्दर, यह देखें कि वह देखें, तय करना मुश्किल था। संसार की सब से सुन्दर महिला को प्रत्यक्ष देखने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ, यह समझकर मैं सब फोटो देख रहा था। उसके एक एक अंग की, अलग अलग भाव-भंगिमा की फोटो खींची गई थी। कहीं पाँवों की मासलता दिखाई गई थी तो कहीं उसकी पीठ को फोकस किया गया था, कहीं हाथ, कहीं पेट, अंग उपांगों का ऐसा विवरण मैंने पहले कभी देखा ही नहीं था। मेरे मस्तिष्क में धमाके हो रहे थे। उसकी सब तस्वीरें मुझे झकझोर रही थी, कुछ सोचने की ताकत भी नहीं रही थी। उसकी अलग अलग तस्वीरें, मेरे शरीर में, मेरे खून की तरह प्रवाहित हो रही थी। एक तस्वीर ने तो मुझे पूरा रोमांचित कर दिया। पूरे बदन में समंदर का बवंडर हरहरा रहा था। मेरे तन-बदन में आग लग चुकी थी। उस तस्वीरकी वह नग्न औरत मेरे समक्ष जीवंत प्रतिमा के रूप में साकार होकर प्रकट हुई। आँखों के सामने खिडकी का जर्जरीत पर्दा लहरा रहा था, मुझे लगा वह किसी औरत की साडी का पल्लू है और उसकी मोरपंखी गुदगुदाहट मेरे मुखको आल्हादकता दे रही थी। झुम्मर की सीपियाँ एक दूसरे से टकराकर खनखनाहट के मन्द स्वर, पूरे प्रासाद में जलतरंगी माहौल निर्माण कर रही थी। उस तस्वीर की मदमस्त, पूर्ण नारी, मेरी बाँहों में स्थिर हो गई। मैंने उसे आलिंगन बद्ध किया। बची हुई सब शक्ति को संजोकर उस काल्पनिक शरीर को झकझोर दिया।

काफी समय बाद आग शांत हुई। मैं काल्पनिकता से वास्तविकता में आया। पानी का गिलास लेकर वह सामने खडी थी। उसके हाथ से गिलास गिरे नहीं इसलिए मैंने जल्दी जल्दी गिलास लेकर होठों को लगाया। विचारों के बादल शांत हो गये थे। मैंने आसपास देखा, सब यथावत् था। वही पुराने जर्जरित परदे मौनवत् लहरा रहे थे। सिर के उपर का झुम्मर भी निस्तेज लटक रहा था और वह भी कुर्सी के पीछे वैसे ही खडी थी।

मैं अपने आप शर्मिंदा हो रहा था, लगा इतने बडे घर में मैंने मानसिक रूप से चोरी की है। हाथ में था वह आल्बम मैंने यंत्रवत् वहीं पर रखा और मुडा। जाते जाते मेरे कानों में शब्द सुनाई दिए- 'ओब्रीगाद, ओब्रीगाद ?' अर्थात धन्यवाद, धन्यवाद।

-*-